UGC Approved Journal No – 40957
(IIJIF) Impact Factor- 4.172
Regd. No. : 1687-2006-2007
ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

AN INTERDISCIPLINARY PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Chief Editor : *Indukant Dixit*

Executive Editor : *Shashi Bhushan Poddar*

Editor
Reeta Yadav

Volume 13 March 2019 No. III

Published by
PODDAR FOUNDATION
Taranagar Colony
Chhittupur, BHU, Varanasi
www.jigyasabhu.blogspot.com
www.jigyasabhu.com
E-mail : jigyasabhu@gmail.com
Mob. 9415390515, 0542 2366370

JIGYASA, ISSN 0974-7648, Vol. 13, No. III, March 2019

Contents

- **त्रिवेणी संघ और सामाजिक आन्दोलन** 1001-1007
  पप्पु ठाकुर, शोध छात्र (इतिहास), वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

- **फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में स्त्री विमर्श** 1008-1013
  उमाकान्त कुमार, शोध छात्र, हिन्दी विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा
  प्रो. डॉ. राम नरेश राय, विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, जगदम कॉलेज, छपरा (बिहार)

- **महाकविकालिदास प्रणीत अभिज्ञानशाकुन्तलम् का सामान्य अध्ययन** 1014-1019
  प्रिया सिंह, शोधच्छात्रा, व्याकरण विभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

- **बिहार में कांग्रेस पार्टी की स्थापना : एक विश्लेषण** 1020-1023
  डॉ. निकेता सिंह, पीएच. डी. (इतिहास), बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

- **पुराणों का वैषिष्ट्य** 1024-1031
  डॉ. जया मिश्रा, एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, आर्य महिला पी.जी. कॉलेज, वाराणसी

- **शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद राष्ट्रों की सुरक्षा को लेकर अनिश्चितिता की स्थिति : एक विश्लेषण** 1032-1041
  डॉ. ज्योत्सना त्रिपाठी, पूर्व शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, राजा श्रीकृष्णदत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (समबद्ध वीर बहादूर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर)

- **कृषि एवं ग्रामीण विकास : भारत में पंचवर्षीय योजना के संदर्भ में** 1042-1045
  डॉ. सुधीर कुमार सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर, कृषि अर्थशास्त्र पी. जी. कॉलेज गाजीपुर

- **बदलते वर्तमान परिवेश में भारत की विदेश नीति** 1046-1050
  डॉ. आभा सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीतिक विज्ञान, विभाग, कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविधालय, बादलपुर गौतमबुद्ध नगर

JIGYASA, ISSN 0974-7648, Vol. 13, No. III, March 2019

- **हिंदी के विकास में अनुवाद की भूमिका** 1111-1116
  डॉ. अर्चना थामा, एसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग), डी.ए.वी. कॉलेज, मुजफ्फरनगर

- **खसपर्जिया बोली की ध्वनियों का अध्ययन** 1117-1121
  देवी दत्त, शोध छात्र, हिन्दी विभाग, एम.बी. पी.जी. कालेज, हल्द्वानी, नैनीताल (उत्तराखण्ड)

- **'दुष्यन्त कुमार की ग़ज़लों में यथार्थबोध'** 1122-1125
  अनूप कुमार सिंह, शोधार्थी (हिन्दी तथा आधुनिक भाषा विभाग), लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

- **वैदिक कालीन नारी की प्रासंगिकता वर्तमान सन्दर्भ में** 1126-1129
  डॉ. अनीता कुमारी, एसो. प्रो. संस्कृत विभाग, राजकीय महिला पी. जी. कॉलेज, गाजीपुर

- **पद्मश्री रामकुमार जी के चित्रण संसार का सौन्दर्यात्मक विश्लेषण** 1130-1134
  डॉ. उमाशंकर प्रसाद, (एसोसिएट प्रोफेसर), चित्रकला विभाग, श. म. प. राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ (उ.प्र.)-250002

- **भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु सहयोग मसौदा : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में** 1135-1140
  डॉ. राम विजय सिंह, एसो० प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, आगरा कॉलेज, आगरा

- **भारतीय राष्ट्रीयता, समाजवाद और विश्वशान्ति के अभिप्रेरक स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों की समीक्षा** 1141-1147
  डॉ. दुर्गावती उपाध्याय, संकाय प्रमुख वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर, उत्तर प्रदेश
  दिव्या सिंह, शोध छात्रा, शिक्षाशास्त्र, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर उत्तरप्रदेश

- **शंखलिपि का अभिलेखीय अध्ययन : मुण्डेश्वरी के विशेष सन्दर्भ में** 1148-1155
  देवेन्द्र कुमार, शोध छात्र, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, काशी हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी

- **मार्क्सवादी चेतना और रघुवीर सहाय** 1156-1162
  विपिन कुमार मिश्र, शोध छात्र, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

वैदिक कालीन नारी की प्रासंगिकता वर्तमान सन्दर्भ में

डॉ. अनीता त्रिपाठी *

किसी भी सभ्यता की आत्मा समझने, उसकी उपलब्धियों एवं श्रेष्ठता का मूल्यांकन करने का सर्वोत्तम आधार वहाँ की नारियों की दशा का अध्ययन करना है। भारतीय समाज का प्रारम्भ वैदिक युग से माना जाता है। वैदिक साहित्य के अध्ययन से पता चलता है कि वैदिक समाज में नारियों का गौरवपूर्ण स्थान था। वह जगत की निर्मात्री है। जीवन की सृजनात्मक शक्ति है। ज्ञान, धन और शकित् की प्रतीक त्रिदेवियाँ है। यह कथन प्रत्येक मानव किसी न किसी रूप में स्वीकार करता है। वैदिक काल नारियों के लिए स्वर्णिम काल था। उस युग में नारी को वन्दनीय और पूजनीय माना जाता था। मनुस्मृति में कहा गया है–

यत्र नार्यास्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

नारी को दैवी शक्ति, मातृशक्ति, ब्रह्मविद्या, श्रद्धा, कामधेनु अन्नपूर्णा, ऋद्धि–सिद्धि आदि विभिन्न नामों से सम्बोधित किया गया है। वह सब कुछ है जो प्राणी के समस्त अभावों एवं संकटों का निवारण करती है।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादिपि गरीयसी।

अर्थात् माता और मातृभूमि स्वर्गलोक से भी बढ़कर है। नारी की वीरता, स्नेह, त्याग, विद्वता, उदारता, करुणा, सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति आदि वैदिक साहित्य में यत्र–तत्र सरलता से प्रतिबिम्बित होते हैं। वैदिक कालीन समाज में नारियों की सहभागिता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में रही। नारी पुरुष की सहयोगिनी, सहधर्मिणी और सहायिका थी।

एक ओर वह यज्ञ करती थी तो दूसरी और पुरुषों के साथ रणक्षेत्र में जाती थी तथा युद्ध में प्रतिभाग कर साहस का परिचय देती थी। ऋग्वेद में नारी की शक्ति, सामर्थ्य और अधिकारों का वर्णन है।

धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, दर्शन, व्याकरण, ज्योतिष, ब्रह्मवादिनी, योद्धा आदि के रूप में नारी में अपनी कुशाग्र बुद्धि का प्रदर्शन कर समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त किया।

वैदिक काल में स्त्रियों को शिक्षा, यज्ञ, विवाह आदि क्षेत्रों में पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे। उस समय स्त्रियों का यज्ञोपवीत संस्कार भी उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में नारी का गौरव बताते हुए उसे ब्रह्मा कहा गया है।

स्त्री हि ब्रह्म बभूविथ।[1]

इसका तात्पर्य यह है कि वैदिक काल में स्त्रियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था। वह ज्ञान में उत्कृष्ट होती थी। वेदों में इन्द्राणी

---

* एसो. प्रो. संस्कृत विभाग, राजकीय महिला पी. जी. कॉलेज, गाजीपुर

को आदर्श नारी के रूप में माना गया है। वैदिक काल में अनेक ऐसी स्त्रियों का वर्णन है, जिन्होंने मन्त्र का साक्षात्कार कर उनका प्रणयन किया। इन स्त्री ऋषियों को ऋषिका, मन्त्रदृष्टी तथा ब्रह्मवादिनी कहा जाता था। ऋग्वेद में 24 ऋषिकाओं द्वारा 224 और अथर्ववेद में 5 ऋषिकाओं द्वारा 198 मन्त्र का वर्णन मिलता है। इस प्रकार दोनों वेदों में ऋषिकाओं द्वारा दृष्ट मन्त्रों की संख्या 422 है।[2] इनमें कुछ सूक्त अत्यन्त महत्वपूर्ण है। गार्गी, अपाला, लोपामुद्रा, मैत्रेयी, सूर्या सावित्री, अदिति आदि विदुषी महिलाएं विद्वत गोष्ठियों में प्रतिभाग करती थी। याज्ञवल्क्य और गार्गी का शास्त्रार्थ सर्वविदित है, जिसमें राजा जनक के यज्ञ के अवसर पर गार्गी ऋषिका ने अपनी अद्भुत विलक्षण प्रतिभा तथा तर्कशक्ति से सूक्ष्म प्रश्नों को पूछकर ऋषि याज्ञवल्क्य का मौन कर दिया था । कन्याओं को ललित कलाओं और सुयोग्य वधू के रूप में बनाने के लिए उदार शिक्षण व्यवस्था का प्रबन्ध था, जिससे पारिवारिक जनों के मध्य रहकर वह अपने सुप्रबन्ध से सबको प्रसन्न रखे–

एषा ते राजन् कन्या वधूर्नि धूयतां मया।
सा मातुर्वध्यतां गृहेऽथो भ्रातुरथो पितुः।।[3]

वेदों में स्त्रियों को आषाढ़ा(अज्ञेय) सहमाना(जीनते वाली) सहस्रवीर्या(असंख्य पराक्रमी) असपत्ना(शत्रु रहित) जयन्ती (विजेता), अभिभूवरी(सबो परास्त करने वाली) कहा गया है। वेदों में नारी को 'पुरन्धिर्योश' अर्थात् नगरों की व्यवस्थापिका कहा गया है। वैदिक काल में नारी मातृरूप में अधिक पूजनीय थी–

अम्बितमें नदीतमे देवितमे सरस्वति।
अप्रशता इव प्रशस्तिमाम्ब नृस्कृधि।। [4]

अथर्ववेद में माता को वीरपुत्रों को जन्म देने वाली माना गया है–

पुमांस पुत्र जनय तं पुमाननु जायताम।
भवांसि पुत्राणां माता जातानां जनयश्च यान।।[5]

'बन्धुर्मे माता पृथ्वी महीयाम' इत्यादि के द्वारा पग–पग पर उसकी स्तुति की गयी की गयी है।

वैदिक काल में नारी का दूसरा रूप पत्नी के रूप सम्मानित था। विवाह के पश्चात् उसे पतिगृह में गृहलक्ष्मी व गृहस्वमिनी का अधिकार प्राप्त होता था–

गृहान गच्छ गृहपत्नी ययासः।[6]

एक ओर उसे पति, सास ससुर की सेवा का दायित्व दिया जाता है, तो दूसरी ओर गृहस्वामिनी के रूप में सास–ससुर, ननद आदि की साम्राज्ञी कहा गया है–

साम्राज्ञी श्वसुरे भव, साम्राज्ञी यवश्रवां भव।
ननान्दरि सम्राज्ञी भव, साम्राज्ञी अधिदेववृषु।।[7]

इससे स्पष्ट है कि नारी का पतिगृह में सास, ससुर आदि से भी उच्च स्थान था। अथर्ववेद में दाम्पत्य जीवन की महत्ता का विवेचन करते हुए कहा गया है कि नारी और पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं। पुरुष सामवेद और द्युलोक और नारी ऋग्वेद और पृथ्वी माना है–

अमोऽहमस्मि सा त्वं सामहमस्मि ऋक् त्वंद्यौरहं पृथिवी त्वम् ताविह सं भवाव प्रजामा जनयावहै।। [8]

नारी जागरण के सम्बन्ध में कहा गया है कि नारी को सदा जागरूक रहना चाहिए। जागरूकता से समृद्धि आती है। इसलिए गृहस्थ धर्म के पालन के लिए पत्नी सदा जागरूक रहे और पूरे परिवार को सुख देने वाली हो। पति गृह में आकर वह पति की विशेष सेवा करे। सास–ससुर सदा प्रसन्न रखे–

सुमंगली प्रतरणी गृहाणां सुश्रेवा पत्ये श्वसुराय शंभुः।
स्योना श्वश्रवै प्र गृहान् विशेषमान।।[9]

वैदिक काल में ब्रह्मवादिनी रोमशा ने नारी को शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करते हुए अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाई–

उपोप में मनरामृश मा प्रम्नाणि मन्यथा।
अहमस्मि रोमशा गन्धारीणमिवाविका।। [10]

ऋग्वेद में सूर्या सावित्री का उल्लेख मिलता है। उन ऋचाओं के अनुशीलन से परिवार में सुख शान्ति प्राप्त किया जा सकता है। यह मन्त्र ज्योतिष विद्या का भी ज्ञान कराता है। वैदिक काल में नारियों का ज्ञान ऋचाओं तक ही सीमित नहीं था, अपितु वे आयुर्वेद, संगीत, नृत्यकला, ज्योतिष, युद्धकला का भी ज्ञान रखती है।

वैदिक साहित्य में नारी का एक अन्य रूप कन्या के रूप में मिलता है। अनेक स्थलों पर कन्या के महत्व का वर्णन मिलता है। माता–पिता के स्नेह एवं दुलार की अक्षय राशि कन्या को प्राप्त होती थी। पुत्र–पुत्री से समानता का वर्णन अथर्ववेद में मिलता है–

भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसार मुत स्वसा।[11]

कमनीय कन्याओं की प्राप्ति के लिए पूषा देवता की प्रार्थना करते थे। कन्या कोमल व सुन्दर होने के कारण सभी के स्नेह का पात्र थी–

कन्या कमनीया भवति क्वेयं नेतष्येति न।।

कालान्तर में स्त्रियों की दशा में गिरावट होने लगी। उसकी स्वतंत्रता तथा अधिकार का हनन होने लगा। मध्यकाल तक आते–आते विदेशी आक्रान्ताओं के कारण नारियों पर जो अत्याचार व अन्याय हुआ वह दुर्भाग्य की करुण कथा है। स्त्री मानवोचित अधिकारों से वंचित कर घर रूपी पिंजड़े में पक्षी की तरह कैद हो गयी। धीरे–धीरे शिक्षा से दूर होकर नारी पर्दे के भीतर चली गयी। मुस्लिम आक्रमणकारियों के भय से बाल विवाह, कन्या भ्रूण हत्या, बेमेल विवाह आदि का प्रचलन शुरु हो गया। पुत्री का जन्म परिवार के लिए दुर्भाग्य का सूचक माना जाने लगा स्त्रियों की

स्वतंत्रता समाप्त हो गयी। ऐसे समय में जीजाबाई, सम्भा जी की पत्नी ताराबाई, रानी लक्ष्मीबाई, रानी अहिल्याबाईः बेगम हजरत महल आदि नारियों ने युद्धकर संग्राम जीता तथा गुलामी की बेड़ियों को तोड़ा।

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। कुछ सामाजिक संगठनों तथा सरकार के प्रयासों से जनता की सोच में परिवर्तन आया और स्त्रियों की दशा सुधरने लगी। आज नारियाँ शिक्षित और स्वावलम्बी बनने लगी हैं। अपनी खोई हुई स्वतंत्रता पुनः प्राप्त करने लगी हैं। 21वीं शताब्दी की नारी पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर घर व बाहर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सहभागिता कर अपनी गौरवमयी उपस्थिति दर्ज करा रही है। आधुनिक भारत में पण्डिता क्षमाराव, डा0 कमला पाण्डेय, डा0 नलिनी शुक्ला, डा0 इला घोष, सरोजनी नायडू, इन्दिरा नुई, किरण वेदी, सानिया नेहवाल, पी0वी0सिन्धु आदि अनेक ऐसी नारियाँ हैं, जिनकी विद्वता और कार्यकुशलता का लोहा भारत ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व मानता है। वे वैदिक कालीन स्त्रियाँ रानी विपश्ला, इन्द्राणी, सरमा आदि की तरह युद्ध का प्रशिक्षण प्राप्त कर विषम परिस्थितियों में देश की रक्षा व सेवा कर अपना योगदान भी दे रही है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 21वीं सदी में वैदिक युग की कुछ साम्यता दिखाई पड़ने लगी। आज नारी वैदिक काल की भांति विज्ञान, दर्शन, शिक्षा, राजनीति, व्यापार, सेना, ज्योतिष आदि क्षेत्रों में अपनी विद्वता और कुशलता को प्रदर्शित कर रही है। अब नारी वैदिक काल की भांति सबला बनने के लिए तत्पर हो रही है। नारी सशक्तिकरण वास्तव में वेदों की आत्मा है। इसके लिए हमें अपने अतीत की धरोहर वेदों का अध्ययन कर वैदिक ऋषियों को दिव्य सन्देशों का हृदयंगम करना होगा और नारी के प्रति सकारात्मक सोच को विकसित करना होगा। वह दिन दूर नहीं जब नारी वैदिक काल के स्वर्णिम स्थान को प्राप्त करेगी।

संदर्भ :

1. ऋग्वेद 8/33/9
2. कपिल देव द्विवेदीः वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, पृ0 48
3. अथर्ववेद 5/17ध्3
4. ऋग्वेद 2/41ध्3
5. अथर्ववेद 3/23ध्3
6. ऋग्वेद 10/85/25
7. ऋग्वेद 10/85/46
8. अथर्ववेद, 14/1/20
9. अथर्ववेद 14/1/44
10. ऋग्वेद 1/128/7
11. अथर्ववेद 3/30/3

***